ISSN 2230-7850 Impact Factor : 4.1625 (UIF) Volume - 6 | Issue - 3 | April - 2016

Indian Streams Research Journal

"प्रेमचंद के कथा-साहित्य में नारी चेतना"

डॉ. नीता भोसले
सह प्राध्यापक, सरकारी प्रथम श्रेणि महाविद्यालय, कमलापूर.

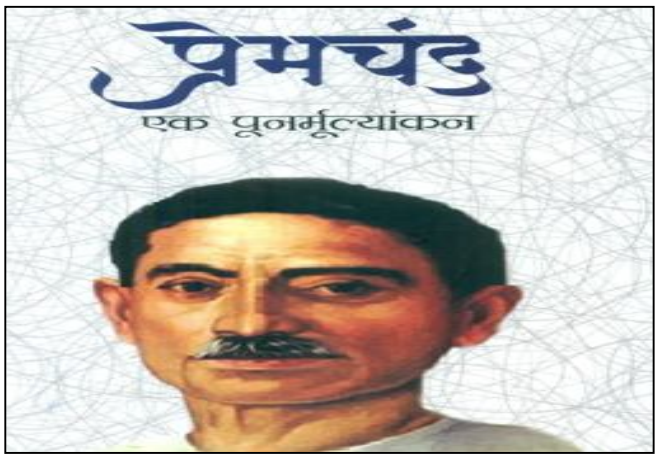

स्त्री पुरुष से उतनी ही श्रेष्ठ है जितना प्रकाश अन्धेरे से । मनुष्य के लिए क्षमा, त्याग और अहिंसा जीवन के उच्चत्तम आदर्श हैं । नारी इस आदर्श को प्राप्त कर चुकी है। "नारी जीवन के हर एक अंश का परिशीलन एवं अनुशीलन कर कथाकार प्रेमचंद ने नारी के यथार्थ रूप का अंकन कियाहै जो आदर्श की और उन्मुख है। समकालीन स्थितिगतियों के प्रति प्रतिस्पंदित होनेवाले लेखक की यह दृष्टि चेतना कहलाती है।

प्रेमचंद जी ने बाल्य, यौव्वन, प्रौढ तथा वृद्ध सभी प्रकार की अवस्थाओं में नारी के जीवन को समग्र रूप से अध्ययन कर नारी जीवन से सम्बन्धित विविध प्रकार की समस्याओं का चित्रिकरण कर नारी को सचेत करने की चेष्ठा की है । सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक, सांस्कृतिक और नैतिक धरातलपर नारीका शोषण किस प्रकार हो रहा है और ऐसी विरोधी परिस्थितियों से संघर्ष करतीहुई नारी किस प्रकार अपने उदात्त व्यक्तित्व को स्थापित करने के लिए कदम आगे बढ़ा रहीहै इसका मार्मिक चित्र प्रस्तुत करने में प्रेमचंद ने न केवल अपनी अव्दितिय प्रतिभा का परिचय दिया बल्कि नारी को सुप्तावस्था से जागृत किया है। उनकी दृष्टि में नारी त्यहाग एवं बलिदान की प्रतिमूर्ति है । "सेवा और त्याग की देवी जबान की तेज पर मोम जैसा हृदय, पैसे-पैसे के पीछे प्राण देनेवाली, पर मर्यादा की रक्षा के लिए अपना सर्वस्व होम करने को तैयार।"

पारिवारिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में महत्त्वपूर्ण कार्यभार संभालनेवाली नारी रुढिगस्त सम्प्रदयों एवं मान्यताओं के कारण कई कठिनाईयों का सामना कर रही है ।

अधिकांश नारियाँ दहेज प्रथा के करालपाश में बन्दी होकर, अनमोल विवाह के शिकार होकर जीवन पर्यंत तक इसके बुरे फल भोगती रहती हैं। 'सेवामन' की 'सुमन', 'निर्मला' की 'निर्मला' इस प्रकार अनमोल विवाह व दहेज प्रथा के शिकार हैं। वृद्ध पुरुष से विवाहित युवती का असंतुष्ट जीवनयापन, प्रौढ़ पुरुष की हीन भावना तथा उनके फलस्वरूप उत्पन्न सन्देह का सुन्दर एवं सजीव चित्रण प्रेमचंद ने इस उपन्यासों में किया है । 'सेवासदन' उपन्यस में सुमन के पति गजाधर प्रसाद की मानसिकता का चित्रण लेखक ने खींचा है । भारतीय समाज में नैतिकता का दोहरा मानदण्ड प्रचलित है। प्रेमचंद के समय में यह और भी अधिक थी। जीन कार्यों के लिए पुरुष निंदनीय नहीं होता, उन्हीं के कारण 'सेवासदन' की 'सुमन' सरल हृदय सदन पर मुग्ध होकर उनसे प्रेम करने लगती है। पर सदन उसे उपहार देकर उसे प्रसन्न करना चाहत है। लेकिन सुमन में उसके उपहारों की भूख नहीं।

वेश्याओं के प्रति समाज की कथोरता के विषय में 'वेश्या' कहानी की 'माधुरी' का कहना है कि 'पुरुष इतना निर्लज्ज है उसकी दुरवस्था से अपनी वासना तृप्त करना है और इसके साथ ही इतना निर्दय कि उसके माथे पर पतिता का कलंक लगाकर उसे दुरवस्था में मलते देखना चाहता है। क्या वह नारी नहीं है? क्य नारीत्व के पवित्र, मन्दिर में उसका स्थान नहीं?

सामाजिक विडम्बनाओं तल्था रूढिगत मान्यताओं से नारी को मुक्त करने के प्रयस में प्रेमचंद ने रूढियों केप्रति विद्रोह करने के लिए नारी समाज को प्रोत्साहित किया है। प्रेमचंद ने अपनी लेखनी के माध्यम से महिलाओं तथा समाज सेवा की ओर आकृष्ठ करने का सफल प्रयास किया है। मानवतावादी कलाकार होने के कारण प्रेमचंद ने अपनी रचनाओं में स्त्री स्वातंत्य पर अधिक जोर दिया था।

कर्मभूमि, उपन्यहास, भारतीय नारी की राष्ट्रीय चेतना एवं राजनीतिक जाग्रुति का सजीव चित्र है । इस उपन्यास की स्त्रीयाँ पुरुष के कंधे से कंधा मिलाकर राष्ट्रीय आंदोलन में भाग लेती हैं और सफल भी हो जाती है।

आर्थिक विषमताओं से ग्रस्त भारतीय समाज में परिवार का भार पुरुष से भी अधिक नारीको ही अपने कंधों पर उठाना पड़ता है। अपने परिवार के सुख के लिए स्त्री इन विषमताओं का सामना करने के लिए सिद्ध हो जाती है। इसी विषय को प्रेमचंद जी ने गोदान की धनिया के माध्यम से प्रकट करने की चेष्टा की है।

इस प्रकार आदर्शोन्मुख यथार्थवादी कथाकार प्रेमचंद अपने पात्रों के माध्यम से समकालीन समाज का बोध कराते हुए उसमें नारी को दिए गए स्थान को परखते हुए उसके

उद्धार में जनता को कर्तव्य की ओर उन्मुख करने के सफल प्रयास में अग्रसर हुए। उनमें नारी के प्रति अपार श्रद्धा एवं गौरव की भावना है। उनमें नारी जागरण और स्त्री स्वातंत्र्य की भावना अधिक है। स्वतंत्रता के लिए वे वनिता आश्रमों की स्थापना आवश्यक मानते हैं। नारी पतिता और कुलटा समझी जाती थी। स्त्री-पुरुष के बीच के इन वैषम्यों के कारण उत्पन्न समस्याओं को भी कथाकार ने अपनी गहन सामाजिक दृष्टि से परखा था । 'प्रेमाश्रम', 'वरदान', 'सेवासदन', 'निर्मला' आदि उपन्यासों के तथा 'मनोसरोवर' कहानी संग्रह में संगृहित 'सुभागि', 'बेटोंवाली विधवा', 'शान्ति' आदि के केन्द्र बिन्दु में ऐसे ही नारी पात्र हैं।

अवैध सन्तान की समस्या पर भी कथाकार प्रेमचंद ने प्रकाश डाला है। 'मिस पद्मा' कहानी में प्रेमचंद जी ने अवैध सन्तान से उत्पन्न होनेवाली समस्याओं का चित्रिकरण कर उन समस्याओं से दूर रहने का संदेश भी दिया है।

भारतीय समाज को प्राचीन काल से वैधव्य की समस्या विचलित कर रही है। अनेक समाज सुधारकों के अथक प्रयास से और वैनिक प्रगति तथा साक्षरता के परिणाम स्वरूप आजकल तो विधवाएँ भी पुनर्विवाह कर रही है। लेकिन प्रेमचंद के समय में ऐसा नहीं था। उन्हें समाज में गौरव नहीं मिलता था, उल्टे निंदा भी झेलनी पडती थी। 'प्रति' उपन्यास की 'पूर्णा' और 'गबन' उपन्यास की 'रतन' आदि भारतीय विधवाओं के जीवन के प्रतीक है। 'मानसरोवर' में संकलित 'बेटोंवाली विधवा' कहानी में वैधव्य की प्राप्ति के पश्चात परिवार और समाज में नारी की दीन-हीन स्थिति किस प्रकर होतीहै, और सन्तान पालन का भार कितना दुष्कर होता है, इसका मार्मिक चित्र भी प्रस्तुत किया गया है।

'धिक्कार' कहानी में विधवा 'मानी' की दिशा तथा 'निर्मला' उपन्यास में विधवा रुखिमणी की स्थिती का चित्रण करके यह कटु यथार्थ का सजीव चित्रण समाज के सम्मुख प्रस्तुत किया गया है कि विधवा की दशा आश्रयदाता परिवार में दासी से भी हीन है। प्रेमचंद जी के उपन्यास 'प्रति' की केंद्र बिन्दु विधवा समस्या ही है। इस की नाय्हिका पूर्ण विवाह के दो वर्ष बाद ही विधवा हो जाती है।

स्त्री जाति व्दारा झेली जानेवली एक ज्वलंत समस्या है विधवा समस्या। इस समस्या पर प्रेमचंद ने अपनी दृष्टि डाली है। वेश्याओं के प्रति उन्होंने सहानुभूति व्यक्त की है। वैधव्य, आर्थिक विषमताएँ अत्याचर आदि के फलस्वरूप स्त्रियाँ विधवा होकर इस वृत्ति का आश्रय लेतीहै। लेखक की मान्यता है कि वेश्याओं के हृदय में भी सामान्य नारी की भाँति प्रेम प्राप्त करने की प्रबल आकांक्षा रहती है ।

प्रयास में अग्रसर हुए उनमें नारी के प्रति अपार श्रद्धा एवं गौरव की भावना है। उनमें नारी जागरण भावना अधिक है। स्ती स्वतंत्रता के लिए वे वनिता आश्मों की स्थापना आवस्यक मनते हैं।